राष्ट्रभाषा के संबंध में गांधी जी की विचारधारा

*डॉ. हरीश चन्द्र

शोध सारांश

गांधी जी को इस बात का अत्यधिक दुःख था कि भारत जैसे विशाल और महान राष्ट्र की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र का प्राण है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए।

प्रत्येक प्रान्त में अलग–अलग भाषा बोली जाती है और सबको एक करने वाली भाषा अंग्रेजी है जो विदेशी भाषा है। इतने बडे राष्ट्र की राष्ट्रभाषा एक विदेशी भाषा हो यह देश के लिए अपमान की बात है। गांधीजी ने राष्ट्रभाषा के संबंध में महत्वूपूर्ण विचार प्रकट किये है। उनकी दृष्टि में अगर हमें एक राष्ट्र होने का दावा सिद्ध करना है तो हमारी अनेक बाते एक सी होनी चाहिए। भिन्न–भिन्न धर्म और सम्प्रदायों को एक सूत्र में बांधने वाली हमारी एक सामान्य संस्कृति है। उसी प्रकार हमें एक सामान्य भाषा की भी आवश्यकता है। इस देशें की राष्ट्रभाषा कौनसी हो इस संबंध में गांधीजी ने कहा है कि 'हिन्दुस्तानी अर्थात् हिन्दी और उर्दू दोनो के मिश्रण से बनी हुई हिन्दी देहली, लखनऊ, प्रयाग जैसे नगरों में आप लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिन्दुस्तान की भाषा है, शिक्षित मनुष्य को यह भाषा शुद्ध रीति से बोलते, लिखते और पढ़ते आनी चाहिए। गांधी जी का यह स्पष्ट मत था कि अंग्रेजी राष्ट्रभाषा न तो हो सकती है और न होनी चाहिए।

गांधीजी ने अपने सार्वजनिक जीवन के आरम्भ में ही दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के समय राष्ट्रभाषा की समस्या पर विचार कर लिया था और हिन्दुस्तान लौटते ही उन्होने अपना मत प्रकट कर दिया था। सबसे पहले गुजरात–शिक्षा परिषद सम्मेलन के अवसर पर बोलते हुऐ उन्होने हिन्दी के महत्व का उल्लेख किया था। सन् 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे सभापति बने और उन्होने अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में हिन्दी प्रचार की व्यापक योजना बना डाली। इस कार्य को उन्होने इनती गंभीरता ओर तत्परता में आरम्भ किया कि सन् 1918 में शिक्षको के प्रथम दल के साथ उन्होने अपने पुत्र देवदास को ही दक्षिण भारत भेजा। स्वयं गांधीजी ने दक्षिण में भ्रमण कर लोगों में राष्ट्रभाषा की भावना को दृढ़ किया। दक्षिण में हिन्दी प्रचार को सहज बनाने के संबंध में उनका यह पत्र उल्लेखनीय है, जो उन्होने एक प्रचारक को लिखा था, जब तक तामिल प्रदेश के प्रतिनिधि सचमुच हिन्दी के बारे में सख्त नही बनेगें, तब तक महासभा मे से अंग्रेजी का बहिष्कार नहीं होगा। मैं देखता हूँ कि हिन्दी के बारे में करीब–करीब खादी के जैसा हो रहा है। वहां जितना सम्भव हो, आन्दोलन किया करों। आखिर में तो हम लोगों की तपश्चर्या और भगवान की जैसी इच्छा होती वैसा ही होगा। अपनी 'आत्मकथा' के आरम्भ में गांधीजी ने लिखा है कि अब तो मे मानता हूँ कि भारतवर्ष के उच्च शिक्षक क्रम में मातृभाषा के उपरान्त राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए भी स्थाना होना चाहिए। इस संबंध में स्पष्टता करते हुऐ उन्होन 'हरिजन' में लिखा है, 'हिन्दुस्तानी हमारी राष्ट्रभाषा है या होगी, ऐसी घोषणाएं यदि हमने सच्चाई के साथ की है तो फिर हिन्दुस्तानी की पढाई अनिवार्य करने में कोई बुराई

नही है। मातृभाषा खतरे में है ऐसा शोर मचाया जाता है वह या तो अज्ञानवश मचाया जाता है या उसमें पाखंड है। वर्तमान भाषा–विवाद के वातावरण में गांधीजी के ये विचार किस भांति विस्मृत कर दिये गये है, यह देखने की बात है। गांधी–शताब्दी के अवसर पर राष्ट्रभाषा के संबंध में गांधी–विचारधारा का महत्व निर्विवाद है।

गांधी–विचारधारा के आध्यात्मिक धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्य, कला, शिक्षा, राष्ट्रभाषा आदि से संबंधित इन्ही सिद्धान्तों ने हिन्दी–साहित्य की सभी विधाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है जिसका निरूपण द्वितीय–खंड में किया गया है।

***सह–आचार्य**
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बहारोड़, अलवर (राज.)

शोध संदर्भ

1. हिन्द स्वराज– पृ. 253
2. मेरे सपनो का भारत गांधी – पृ 06
3. मातृभाषा प्रेम – गांधी
4. राष्ट्रभाषा प्रेम – गांधी
5. स्टेडीज इन गांधी – एनकेबोझ
6. गांधी वाणी – रामनाथ सुमन
7. गांधी और गुरूदेव – ले. गुरूदयाल मलिक
8. 1916 मे बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में दिया गया भाषण
9. यंग इण्डिया
10. गांधी विचार दोहन–ले. किशोरी लाल
11. गांधी सेवा संघ – सम्मेलन–मालिकन्दा (बंगाल)
12. राष्ट्रभाषा के संबंध में गांधी जी की विचाराधारा